



Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

October- December2023

Volume 04 Issue IV

Scientific Journal of Impact Factor (SJIF) Impact-5.67



TOGETHER WE REACH THE GOAL

International Impact Factor Services



**International Society for Research Activity (ISRA)
Journal-Impact-Factor (JIF)**



Akshara Publication

Plot No 143 Professors colony,
Near Biyani School, Jamner Road, Bhusawal Dist Jalgaon Maharashtra 425201

Editorial Board**:- Chief & Executive Editor:-****Dr. Girish Shalik Koli**

Dongar Kathora

Tal.Yawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India Pin Code: 425301

Mobile No: 09421682612

Website:www.aimrj.com Email:aimrj18@gmail.com**:-Co-Editors :-**

- ❖ **Dr. Sirojiddin Nurmatov**, Associate Professor, Tashkent Institute of Oriental Studies, Tashkent City, Republic Of Uzbekistan
- ❖ **Dr.Vivek Mani Tripathi**, Assistant Professor, Faculty of Afro – Asian Languages and Cultures, Guangdong University of Foreign Studies, Guangzhou, Guangdong, China
- ❖ **Dr.Maxim Demchenko** Associate Professor Moscow State Linguistic University, Institute of International Relationships, Moscow,Russia
- ❖ **Dr.Mohammed Abdraboo Ahmed Hasan**, Assistance Professor (English) The Republic of Yemen University of Abyan General manager of Educational affairs in University of Abyan ,Yemen.
- ❖ **Dr. Wajira Gunasena**, Lecturer, Dept of Languages, Cultural studies & Performing Arts University of Sri Jayewardenepura, Nugegoda, Sri Lank
- ❖ **Shiv Kumar Singh** , Lecturer, Indian Faculty of Arts and Humanities, University of Lisbon Portugal.
- ❖ **Dr. Vijay Eknath Sonje**, Assistant Professor (Hindi) D. N. College, Faizpur [M. S.]
- ❖ **Mr. Nilesh Samadhan Guruchal**, Assistant Professor (English)Smt. P. K. Kotecha Mahila Mahavidyalaya, Bhusawal, Dist. Jalgaon [M. S.] India.
- ❖ **Dr. Shaikh Aafaq Anjum**, Assistant Professor (Urdu) Nutan Maratha College, Jalgaon. [M. S.] India.
- ❖ **Mr. Dipak Santosh Pawar**, Assistant Professor (Marathi)Dr. A.G.D. Bendale Mahila Mahavidyalaya, Jalgaon [M. S.] India.

PEER REVIEW POLICY

AMRJ will send a copy of research work to the editorial board. The board will verify the same according to the rules of research methodology. Then plagiarism in the work will be checked. In case if the research methodology is not followed properly by the researcher, message will be given to the researcher and he/she will be asked to revise the work in a stipulated period.

After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee.

SINGLE BLIND PEER REVIEW BY EXPERT PEER REVIEWERS

AMRJ adopts the Single Blind Peer Review Method. After checking research methodology and plagiarism, the work will be sent to the Peer Review Committee for review through email. AMRJ do not disclose the details of researcher to Peer Review Committee. The Peer Review Table will be displayed online according to the criteria decided by the Editorial Board. After the approval by Peer Review Committee, the research work will be published in the Issue. In case if any instructions received from Peer Review Committee, the same will be forwarded to the researcher and he/she will be asked to clear the matter. Editorial Board of AMRJ will be the final authority to decide whether a research work is to be published or not.

AMRJ Disclaimer:

For the purity and authenticity of any statement or view expressed in any article. The concerned writers (of that article) will be held responsible. At any cost member of Akshara's editorial Board will not be responsible for any consequences arising from the exercise of Information contained in it.

Index

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
1	Fostering Peace through Value Education : A perspective in teacher education	Dr. Asha P Pathrose	05
2	Search for Identity in the Novels of Abdulrazak Gurnah	Dr Abhay Madhukarrao Patil	12
3	Study of Digitization and Quality of Life in India	Dr. Mritunjay Kumar Mishra	17
4	Obesity And Stress : A Statistical Analysis	Anjali Yadav Prof. Jyoti Tiwari	25
5	2020 : NEP Empowered teacher	Anju	29
6	'Contribution of Management Thinkers'	Mrs. Yamini P. Galapure	32
7	Effective implementation of National Education Policy – 2020 : Academic Bank of Credit (ABC ID)	Dr. Jaysree C. Salunkhe	34
8	Importance of Language and Multilingualism : NEP-2020	Dr. Archana Ramesh Wisave	38
9	ग्रामीण युवा सशक्तीकरण एवं दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना: एक अन्तः क्रियात्मक अध्ययन	प्रो. डॉ.अनूप कुमार सिंह बीरिन्द्र सिंह	42
10	हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की उपयोगिता	डॉ.सोनकांबले अरुण अशोक	50
11	असुर जनजाति की त्रासदी – 'ग्लोबल गांव के देवता'	डॉ. पी. व्ही. गाडवी	54
12	कालजयी रचना दुष्यंतकुमार कृत उपन्यास 'आँगन में एक वृक्ष'	प्रा.डॉ.रविंद्र आर.खरे	56
13	जीवन एक कुरुक्षेत्र	डॉ. स्मृति कुमारी सिंह	59
14	21 वीं सदी के हिंदी भाषा पर आधुनिक तकनीक का प्रभाव	प्रा. स्नेहलता गौतम कांबले	62
15	मीडिया की विश्वसनीयता पर उठते सवाल	डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा	65
16	'यमुना के बागी बेटे' उपन्यास की रचनात्मक पीठिका	ऐपिन सिंह	70
17	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में असंगठित क्षेत्र के कामगार मजदूरों के समाजिक यथार्थ का चित्रण	विश्वभर प्रसाद डॉ. बट्टी दत्त मिश्र	74
18	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कवि रामप्रसाद बिस्मिल का योगदान	डॉ.कोमलकुमार परदेशी	77
19	संघर्षरत विश्व व्यवस्था: समाधान के दार्शनिक यथार्थवादी उपाय एवं भारतीय दृष्टि	फणीन्द्र किशोर	81
20	सुब्रह्मण्य भारती: एक चिंतन	विश्वजीत सिंह	86
21	प्रकृति की रक्षा में गुरु जंभेश्वर के स्वर	कुलदीप	89
22	डॉ. भीम राव अम्बेडकर : शिक्षा दर्शन	श्रीमती मोनिका	93
23	गुजराती भाषा का अनूदित उपन्यास – उपरवास कथात्रयी : स्थिति और गति	प्रा.डॉ.पूनम त्रिवेदी	96
24	राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020	प्रा.डॉ. सी.जी. कडेकर	100
25	भूमण्डलीकरण और हिन्दी साहित्य	डॉ. जयंतिलाल. बी.बारीस	103
26	हिंदी साहित्य की 'वाद' संपदा – प्रगतिवाद	डॉ. मनोज एन. पाटील	109
27	लोकगाथाओं की उत्पत्ति एवं विकास	डॉ. विमुखभाई यु. पटेल	112

Sr.No	Title of the Paper	Author's Name	Pg.No
28	महाविद्यालयीन स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रसन्नता के प्रभाव का अध्ययन	प्रा. सुनीता अरविंद जगताप	115
29	मराठी साहित्याला सशक्त करणारी प्रा. आ. य. पवारांची विज्ञान कविता	प्रा. डॉ. अनिल बळीराम बांगर	118
30	जलसिंचन व त्याची परिणामकारकता	प्रा. डॉ. सुभाष रामचंद्र गुर्जर	123
31	कवयित्री रुक्मिणीबाई तुकाराम पाटील व उर्फ वैदर्भी बहिणा	प्रा. डॉ. अनंत वराडे	126
32	आधुनिक मराठी ख्रिस्ती साहित्याचे योगदान	प्रा. दीपक संतोष पवार	129
33	'अवकाळी पावसाच्या दरम्यानची गोष्ट'कादंबरीमध्ये ग्रामविश्वाचे चित्रण	प्रा.कोटंगे दत्ता नामदेव	132
34	विकासाबाबतचा आदिवासींचा दृष्टिकोन आणि नक्षलग्रस्त जिल्ह्यासाठीची एकात्मिक कृती योजना	प्रा.डॉ.विशाल दिलीप वाणी	135
35	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांचे राजकीय विचार	डॉ.संभाजी संतोष पाटील	140
36	अध्यापक विद्यालयातील छात्राध्यापकांच्या सर्वांगीण विकासासाठी सातत्यपूर्ण सर्वकष मूल्यमापन पद्धतीतील बदल	शैलेश गायकवाड डॉ. राजश्री मेश्राम	145
37	दलित काव्य एक जीवनदर्शन	प्रा. नवाजी गेंदलाल घरत	151
38	'ऊसकोंडी' ग्रामीण कादंबरीतील कृषीजीवन	प्रा.डॉ.दिनेश हिंमतराव पाटील	156
39	समाज जीवनात प्रसार माध्यमांची भूमिका	श्री विलास बन्सी दांडगे	159
40	ग्रामगीतेतील ग्रामशुध्दी	प्रा. डॉ. अनंत वराडे	163

डॉ.सोनकांबले अरुण अशोक

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

किसन वीर महाविद्यालय, वार्ड

शोध-प्रपत्र सारांश -

हिंदी भाषा भारत के संविधान के अनुसार राजभाषा है और लोकमानस में राष्ट्रभाषा के रूप में विद्यमान है। किसी भी भाषा का विकास उसके व्यवहार पर आधारित होता है। हिंदी भाषा के विभिन्न रूपों में हिंदी व्यवहृत है, जिसमें मुख्यतः मातृभाषा, संपर्क भाषा, सृजनात्मक भाषा, कार्यालयीन भाषा, विज्ञापन की भाषा और साहित्य की भाषा आदि के रूप में स्थापित है। विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा के विकास में एक और बिंदु जुड़ता है—अनुवाद। वैश्विक स्तर पर हमारी पहचान बनाने के लिए हिंदी भाषा का विकास काफी जरूरी है और वह अनुवाद के माध्यम से सफल हो सकता है। भाषा और संस्कृति का गहरा संबंध होता है। संस्कृति के विभिन्न तत्वों का अंतरण अनुवाद के माध्यम से कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करने के लिए अनुवाद ही ऐसा माध्यम है, जिससे हम आसानी के साथ जुड़ते हैं। कोई भी विकास करना हो तो उसका भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अनुप्रयोग होना महत्वपूर्ण होता है। हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की भूमिका अहम है। प्रस्तुत शोध-प्रपत्र हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद की उपयोगिता पर आधारित है।

बीजशब्द— अनुवाद, उपयोगिता, हिंदी भाषा, साहित्य, जनसंचार, साहित्येत्तर, अनुप्रयोग, अंतरराष्ट्रीय, भाषासंपर्क और भाषाव्यवहार आदि।

भारत की पहचान जनसंख्या की दृष्टि से विश्व में एक विशाल देश के रूप में है। अलग-अलग बोलियाँ, अलग-अलग संस्कृतियों का संगम भारत में दिखाई देता है। 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी' इस उक्ति को अगर गौर से देखा जाए तो समझ में आता है कि अनेक भाषाएँ, बोलियाँ और संस्कृतियाँ दृश्य, अदृश्य रूप में निवासित हैं। ठोस तरीके से हम अनेक भाषा-व्यवहार को जानते नहीं। भारत का भाषिक रूप इस तरह से व्यापक रूप में फैला हुआ है। ऐसे में एकता और अखंडता की दृष्टि से हिंदी भाषा का विकास कितना जरूरी है, यह हमारे समझ में आता है। भाषाविकास के बारे में डॉ. सुरेश कुमार लिखते हैं—वर्तमान चर्चा के संदर्भ में, भाषा के सामाजिक पक्ष का मुख्य मुद्दा है भाषाविकास—भाषा के संसाधनों का विकास ताकि भाषा के माध्यम से सामाजिक विकास की उन अपेक्षाओं की पूर्ति हो सके जो संस्थायी विचारों, ज्ञान श्रृंखलाओं, भावनाओं, प्रेरणाओं के यथासंभव सफल संप्रेषण पर आश्रित हैं। भाषाविकास की विविध युक्तियों में अनुवाद का विशेष महत्व है, विशेष रूप से भाषासम्पर्क की स्थिति में। भाषासम्पर्क, अन्य बातों के अलावा, अनुवादमूलक भाषाव्यवहार को भी प्रेरित करता है और यह व्यवहार भाषाविकास में फलित होता है। इसे 'अनुवाद की सामाजिकी' (सोशियोलॉजी आफ ट्रांसलेशन), जिसमें साहित्यिक अनुवाद भी शामिल है, कहा जा सकता है।¹ इससे ज्ञात होता है कि अनुवाद की सामाजिकी में साहित्यिक अनुवाद महत्वपूर्ण होता है। इसमें भाषा विकास के संसाधनों में सामूहिक विचार, ज्ञान की श्रृंखला, भाव-भावनाओं के सफलतम संप्रेषण पर आधारित होता है। भाषा सम्पर्क की स्थिति में अनुवाद की महत्ता होती है। हिंदी भाषा में विपुल मात्रा में संसाधन की उपलब्धता होने के कारण हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद अनेक क्षेत्रों में दिखाई देता है। हिंदी भाषा की विकास यात्रा को विश्लेषित करते हुए डॉ. सुरेश कुमार ने लिखा है—'हिंदी की भूमिका—बहुलता से सम्बन्धित मुद्दा है हिंदी की बहुविध संपर्कशीलता। अंग्रेजी के साथ हिंदी का संपर्क लंबे समय तक रहा है। यह सम्पर्क परिघटना समसामयिक स्थिति—संदर्भ में प्रगाढ़ हुई है—समस्तरीय आयाम पर इससे हिन्दी का प्रयुक्ति परक विस्तार हुआ है और उर्ध्वाधर आयाम पर इसने हिन्दी की भाषिक संरचना तथा अर्थपक्ष को प्रभावित किया है। अपनी बोलियों के साथ हिन्दी आंतरिक स्तर पर संपृक्त है।'² प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि हिंदी भारत में विस्तृत क्षेत्रों में बोली जाती है। भारत देश में राज्यों का बँटवारा भाषा के आधार पर हुआ है। एक राज्य की भाषा दूसरे राज्य के लोगों को बोलने नहीं आती है जैसे—मराठी और कन्नड़, तमिल और उड़िया आदि। तो इस वक्त हिंदी यह संपर्क भाषा के रूप में अनेक राज्यों में कार्यरत है। हिंदी संपर्क भाषा होने के कारण हिंदी भाषा का विकास बड़े पैमाने पर हुआ है, इसमें अनुवाद की बड़ी देन है।

मराठी भाषा के सुप्रसिद्ध साहित्यकार उत्तम कांबले द्वारा लिखित 'फिरस्ती' का अनुवाद प्रो.सदानंद भोसले द्वारा हुआ। मराठी में फिरस्ती हिंदी में घुमक्कड़ी के संदर्भ में बताते हुए हिंदी भाषा में अपनी रचना पहुंचाने के संदर्भ में लेखक उत्तम कांबले

लिखते हैं –“अब यह किताब हिंदी में आ रही है...उसकी वजह है एक संवेदनशील व्यक्ति प्रो.सदानंद भोसले ...बहुत मेहनत की है उन्होंने ...बहुत सारी रातें काटी हैं घुमक्कड़ी में ...बस और बस उनकी वजह से ‘फिरस्ती’ हिंदी में घुमक्कड़ी हो गयी... राष्ट्रीय भाषा में पहुँच गयी ...कुछ बातें इतनी सुंदर होती हैं कि उसके लिए धन्यवाद ,शुक्रिया नहीं कहा करते ...बस हृदय में रखा करते हैं ...फिरस्ती (घुमक्कड़ी) के साथ और एक अच्छा आदमी मेरे हृदय में आ गया । मुझे समृद्ध करने आ गया है ...”³ प्रस्तुत उद्धरण से प्रतीत होता है कि लेखक उत्तम कांबले की रचना मराठी से हिंदी में अनुवाद होने के कारण स्वयं को समृद्ध समझते हैं क्योंकि मराठी भाषिक अधिकतर महाराष्ट्र में ही रहने के कारण उनकी रचना को केवल यहाँ के पाठकों तक सीमित रहना पड़ता था लेकिन हिंदी भाषा में प्रस्तुत रचना का अनुवाद होने कारण अब उनके विचार राष्ट्रीय भाषा में पहुँचने वाले हैं । एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने से भाषा का विकास तेज रफ़्तार के साथ होता है । रचना का तुलनात्मक अनुप्रयोग से अनुवाद करने से शब्द-भंडार में तत्सम ,तद्भव ,देशज और विदेशी शब्दों का हिंदी भाषा में अनुप्रयोग करने से वृद्धि होती गई है । अनुवाद से साहित्य के कलापक्ष और भावपक्ष का व्यापक तरीके से हिंदी भाषा में विकास हुआ है और हिंदी भाषा के विकास में उत्तरोत्तर विकास होता दिखाई दे रहा है । हिंदी भाषा में विपुल मात्रा में साहित्य और बोलचाल में हिंदी भाषा का प्रयोग दिखाई दे रहा है ।

अनुवाद की परंपरा बहुत पुरानी है । हिंदी भाषा के विकास में संस्कृत, पालि और प्राकृत भाषा के प्रयोग से इसमें बड़ी मात्रा में प्रगति हुई है । जिसमें वेद, व्याकरण, बड़े-बड़े ग्रंथों का अनुवाद कर हिंदी भाषा का उर्ध्वगामी विकास किया हुआ नजर आता है । 19-20 के दशक में संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद कर और हिंदी के महान साहित्यकार मैथिलीशरण गुप्त ,भारतेंदु हरिश्चंद्र, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और प्रेमचंद आदि ने विदेशी और भारतीय भाषा की कृतियों का हिंदी में अनुवाद कर उसके भाषिक विकास को गति प्रदान किया । राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्रीय चेतना की अवधारण को बरकरार रखते हुए नए भाषिक प्रतिमान के साथ हिंदी भाषा को अन्य भारतीय भाषाओं की चेतना ने शक्ति प्रदान की , इससे हिंदी भाषा का शाब्दिक और अर्थ स्तर का दायरा व्यापक हुआ नजर आता है । विश्वग्राम की अवधारण को सफल बनाने में हिंदी ग्राम से लेकर वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना चुकी है और यह पहचान अनुवाद के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देती है । विज्ञान और तकनीकी में सूचना प्रौद्योगिकी के स्तर पर एक नया विचार गढ़ने की बात की जा चुकी है । इसमें अनुवाद होने से सूचना प्रौद्योगिकी की नई शब्दावली गढ़ी जा चुकी है । हिंदी की पारिभाषिक शब्दावली से तकनीकी की शब्दावली में बड़े पैमाने पर शब्द के विकास में अर्थात् हिंदी भाषा का विकास हुआ है , हो रहा है । क्योंकि सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अंग्रेजी –हिंदी ,हिंदी –अंग्रेजी अनुवाद के माध्यम से एक विशिष्ट प्रकार की प्रयुक्ति बन चुकी है ,जिससे हिंदी भाषा के विकास में प्रस्तुत अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है ।

प्रशासनिक क्षेत्र में तो बड़े पैमाने पर हिंदी का अनुवाद कभी स्रोतभाषा कभी लक्ष्यभाषा के रूप में हुआ है । प्रशासनिक अनुवाद का दायरा भी बहुत बड़ा बनकर उभर गया है । भारत की राजभाषा संविधान के तहत हिंदी है । हिंदी के माध्यम से एक विशिष्ट प्रकार का शब्द भंडार बन गया है । साहित्येत्तर क्षेत्र के अनुवाद में प्रशासनिक भाषा हिंदी के रूप में एक अलग प्रकार की प्रयुक्ति जो शब्द ,रूप ,वाक्य और अर्थ स्तर पर दृष्टिगोचर होती है । जो हिंदी भाषा के विकास में एक मिसाल बनकर उभरी है । भारत की सर्वोच्च संस्था संसद में हिंदी भाषा की महत्ता है । दुभाषिया के पद पर काम करने वाले अधिकारी ,अनुवादक ने भी हिंदी भाषा का भाषिक विकास किया है । संसद में एक विशिष्ट भाषा का अनुप्रयोग हुआ है, वह हिंदी है । सांसद अपनी मातृभाषा में बोल सकते हैं और दुभाषिया उसका तुरंत हिंदी या अंग्रेजी में अनुवाद करता है । इस कारण भाषा की दृष्टि से एक संपन्नता की बात आती है, जो हिंदी अनुवाद सबसे बड़ा अनुवाद माना जाता है क्योंकि भारत की एक महत्वपूर्ण और भारत में सबसे ज्यादा लोग हिंदी भाषा को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी के साथ जोड़ दिए हैं । साथ ही शिक्षा ,नौकरी ,साहित्य ,विधि ,कार्यालय ,विज्ञापन ,जनसंचार –प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के साथ प्रमुख भाषा के साथ जुड़ चुकी है, इसमें इसकी लोकप्रियता का कारण अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में से जो अनुवाद हुआ है, जिससे हिंदी भाषा का विकास हुआ है । एक और कारण यह भी है कि हिंदी भाषा यह सरल, बोधगम्य और अपनी अस्मिता और संस्कृति के साथ जुड़ी हुई है । जो बहुसंख्यक लोगों तक अनुवाद के साथ जुड़े हुए हैं ।

अनुवाद एक महत्वपूर्ण माध्यम है, जिसे हम ग्राम से लेकर विश्व तक पहुँचने के लिए काफी प्रयास करते हैं । संचार माध्यमों में अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास पर डॉ .पी.शहा लिखते हैं –“संचार के माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग अनिवार्यता से होता है । रेडिओ, दूरदर्शन एवं समाचार –पत्र इनमें मुख्य है । आज ये माध्यम अत्यंत लोकप्रिय हैं, प्रत्येक भाषा प्रदेश में इनका प्रचार बढ़ रहा है । प्रादेशिक भाषाओं के समाचार-पत्र समाचारों के लिए सरकारी सूचना, न्यूज एजेंसियों की दी हुई सामग्री, प्रादेशिक संवाददाताओं की डाक आदि पर निर्भर करते हैं । इनमें प्रादेशिक भाषाओं में सीमित सामग्री ही प्राप्त होती है । बाकी की सामग्री अन्य भाषा से अनूदित करनी पड़ती है । रायटर जैसी अंतरराष्ट्रीय न्यूज एजेंसियां अन्य देशों की भाषों में छपे और प्रसारित समाचारों को अलग –अलग भाषाओं में अनूदित करके ग्राहकों तक पहुंचाते हैं ।”⁴ प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि संचार

माध्यमों में अनुवाद की अनिवार्यता बड़ी मात्रा में बढ़ गई है। माध्यमों में प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम महत्वपूर्ण है। प्रादेशिक, राष्ट्रीय और विदेशी भाषाओं से हम व्यापक रूप में हमारी बात रख सकते हैं। वह काम अनुवाद के माध्यम से सफल होता है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में अगर हम देखते हैं तो पता चलता है कि हिंदी भाषा में माध्यमों की संख्या बढ़े पैमाने पर है, इसलिए हिंदी में अन्य भाषा से अनुवाद किया जाता है। जिससे हिंदी भाषा का विकास अनुवाद के माध्यम से होता हुआ स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

अगर भारत को किसी एक बात पर इकट्ठा करना हो तो वह माध्यम है—हिंदी भाषा। 20 वीं सदी में हिंदी में साहित्य के अलावा संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का विकास किया हुआ नजर आता है। राष्ट्र का निर्माण भाषा पर ही होता है। भाषा का हृदय और विचारों के साथ सीधा संबंध दिखाई देता है। हिंदी में अनुवाद साहित्य और साहित्येतर क्षेत्र में बड़ी तादाद में हुआ दिखाई देता है। हिंदी भाषी और अहिन्दी भाषी के द्वारा हिंदी में अनुवाद करने के कारण वैश्विक स्तर पर हिंदी पहुँच रही है। इस संदर्भ में डॉ. अर्जुन चव्हाण के शब्दों में ‘‘एक दूसरे से संपर्क बनाये रखना मनुष्य की जीवन्तता की निशानी है। इस हेतु उसे भाषा का आश्रय लेना पड़ता है। किन्तु संसार के समस्त लोग एक ही भाषा बोलते तो वे आसानी से एक—दूसरे से संपर्क स्थापित करते। मगर स्थिति यह है कि दुनिया के सभी देशों की भाषाएँ भिन्न-भिन्न मिलती हैं, जिससे संपर्क बनाये रखना कठिन होता है। यही नहीं, जहाँ एक देश में भी अनेक भाषाएँ प्रयुक्त मिलती हैं, वहाँ आपस में संपर्क बनाये रखना दुश्चर होता है। भारत के संदर्भ में ही देखे तो राष्ट्रभाषा हिंदी के अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाओं के रूप में मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमी, उड़िया, बंगला, कन्नड़, तेलुगु, तमिल तथा मलयालम जैसी अनेक भाषाएँ यहाँ प्रयुक्त हैं। यही स्थिति अनेक देशों में है। अब प्रश्न यह है कि दो भिन्न भाषा—भाषी सज्जनों को आपस में सम्पर्क स्थापित करना हो तो कौन-सा उपाय करें? इसका उत्तर है अनुवाद।¹ इससे ज्ञात होता है कि भारत की संपर्क भाषा हिंदी के रूप में एक साथ आ सकते हैं। बहुभाषी देश में राष्ट्र की एकता अखंडता को बचाने के लिए हिंदी ही महत्वपूर्ण है। इसकी दौड़ में अन्य भाषा के शब्द हिंदी में आकर भाषिक समृद्धता की ओर हिंदी भाषा अग्रप्रेषित हो रही है। साथ ही हिंदी भाषिक अनुप्रयोगता से अनुवाद की जरूरत अन्य—अन्य संस्कृति और सभ्यता के साथ तादात्म्य स्थापित करने के लिए अनुवाद विशिष्ट रूप में एक कला और विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत है। दो भिन्न भाषा—भाषी आपस में अपना संप्रेषण स्थापित करने के लिए भारत में तो हिंदी भाषा का ही अनूदित रूप में सहारा लेते हैं। यह हिंदी भाषा के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

अनुवाद का प्रधान लक्ष्य सममूल्यता पर आधारित है। हिंदी भाषा के विकास की दृष्टि से अनुवाद के मूल उद्देश्य की ओर इंगित करते हुए डॉ. हरिमोहन ने लिखा है—‘‘अनुवाद—कार्य का मूल उद्देश्य एक भाषा में व्यक्त अर्थ को, दूसरी भाषा के माध्यम से लगभग ज्यों-त्यों संप्रेषित करना है। अतः अनुवादकर्ता मूल कृति के अर्थ—सौन्दर्य को सुरक्षित रखने के प्रति सदैव सचेत रहता है। वह सौन्दर्य की पुनः सर्जना करता है, किन्तु अर्थ को क्षति नहीं पहुँचाना चाहता। उसका प्रथम और अंतिम उद्देश्य है मूल भाषा के पाठ के संसार को पाठक के निकट लाना।² प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि भाषा का विकास केवल शब्द ही नहीं है तो उसका सौन्दर्य भी होता है कि क्योंकि अनुवाद करते समय स्रोतभाषा के सौन्दर्य को लक्ष्यभाषा में अंतरित करते समय उसका सौन्दर्य बरकरार रखने की जरूरत होती है। मूल भाषा के पाठ का भाषिक और अर्थ सौन्दर्य अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा में विपुल मात्रा में रूपांतरित हुआ है, जिसमें संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं से हिंदी भाषा में बड़ी मात्रा में दिखाई देता है। इससे ज्ञानार्जन के साथ-साथ हिंदी भाषा का विकास दृष्टिगोचर होता है। हिंदी भाषा की वृद्धि में अनुवाद की उपयोगिता के साथ ज्ञान के अलग-अलग द्वार खुलते हैं। संपर्क माध्यम के साथ—साथ भाषा और साहित्य में विकास, तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में अनुवाद की उपादेयता है। हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद के माध्यम से विज्ञापन माध्यम भी महत्वपूर्ण है। स्वतंत्र व्यवसाय के साथ—साथ नौकरी पाने के लिए इसका उपयोग काफी है। जिसमें हिंदी अनुवाद के माध्यम से अनेक नौकरियाँ प्राप्त कर सकते हैं—मुख्यतः राजभाषा अधिकारी, सहायक राजभाषा अधिकारी, वरिष्ठ—कनिष्ठ अनुवादक, अन्वेषक, शिक्षक, प्राध्यापक, राज्यसभा, लोकसभा में अधिकारी से लेकर टंकक तक के सारे पद, निवेदक, पटकथाकार, संवाद लेखन, उदघोषक, विज्ञापन, पत्रकारिता, अनुसंधान आदि क्षेत्रों में विपुल मात्रा में हिंदी भाषा का अनुप्रयोग होता हुआ दिखाई देता है। जिससे हिंदी भाषा का अनुवाद के माध्यम से विकास हो रहा है। इसके बारे में डॉ. बालेंदुशेखर तिवारी के मत को उद्धृत करते हुए प्रा. विकास पाटील ने लिखा है—‘‘संसारभर में प्रयुक्त पाँच हजार से अधिक भाषाओं और बोलियों के बीच वैचारिक, सर्जनात्मक और कार्यात्मक तालमेल स्थापित रखने के लिए अनुवाद ही सर्वाधिक लोकप्रिय एवं उपयोगी माध्यम है।³ प्रस्तुत उद्धरण से ज्ञात होता है कि दुनिया में आपस में विचार-विमर्श करने के लिए अनेक बोलियों, भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। इसमें अनुवाद की लोकप्रियता इतनी बड़ी तरीके से विद्यमान है कि अपनी विचारधारा, दृष्टि और कला का संयोजन करने हेतु। साथ ही अपनी संस्कृति की अच्छाई का संवहन करने के लिए अनुवाद की उपयोगिता है। हिंदी भाषा में देश—विदेश की अनेक भाषाओं से अनूदित विचारधारा का, साहित्य का बढ़े पैमाने पर अनुप्रयोग हुआ

है। जिससे हिंदी भाषा की अपनी भाषिक समृद्धि को एक नया आयाम मिलने के कारण उसके विकास में रफ़्तार के साथ बढ़ोत्तरी हो रही है।

भाषाविकास की प्रक्रिया के संदर्भ में डॉ. सुरेश कुमार लिखते हैं –“भाषाविकास की प्रक्रिया द्वंद्वत्मक है। भाषागत संसाधनों की बहुलता के साथ उनका मानकीकरण भी होता चलता है। इसी प्रकार भाषाव्यवहार के संदर्भों के विस्तार के साथ उनमें परिष्करण भी होता जाता है। यहाँ इस बात पर विशेष बल देना अभीष्ट है कि भाषाविकास में भाषासंपर्क की स्थिति का विशिष्ट योगदान है। एक विकासशील भाषा किसी विकसित भाषा के संपर्क में आती है तो इस स्थिति का सकारात्मक प्रभाव उस पर दिखाई पड़ता है। भाषासम्पर्क की चर्चा होते ही अनुवाद की बात सामने आ जाती है। शास्त्रीय शब्दावली में हम कहेंगे कि ‘अनुवाद भाषासम्पर्क का प्रकार्य है’ और इस प्रकार भाषाविकास का प्रभावशाली उपकरण है।”⁸ प्रस्तुत उद्धरण से परिलक्षित होता है कि भाषाविकास तब होता है जब भाषागत संसाधनों के साथ –साथ उसका मानकीकरण और भाषा परिष्करण भी होता है। एक विकासशील भाषा के संपर्क में आ जाने से स्रोतभाषा की समृद्धि लक्ष्यभाषा में परिवर्तित होती है और एक नया विचार, नई दृष्टि के साथ-साथ भाषिक कलात्मकता, सुन्दरता का रूपांतरण अनुवाद के माध्यम से होता है। जिस प्रकार हिंदी में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, शेली, वर्डस्वर्थ, टी.एस. इलीयट, लॉजाइनस आदि विदेशी साहित्य विचारधारा का अध्ययन अनुसंधान और अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा में हमें जानकारी मिलती है।

निष्कर्ष :-

विश्व का ज्ञान समुंद्र की तरह विस्तृत फैला हुआ है। इस ज्ञान का माध्यम भाषा है। अनुवाद से भाषा विकास के साथ – साथ संस्कृति का विकास होता है क्योंकि भाषा संस्कृति की संवाहिका होती है। बहुसांस्कृतिक, बहुभाषिक राष्ट्र में विभिन्न भाषाओं का व्यवहार में आदान –प्रदान होता है। एक छोटे से भू-प्रदेश से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाने के लिए अन्य भाषा में वर्णित ज्ञान –विज्ञान का अनुवाद के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अनुवाद पर भाषा का विकास निर्भर है। हिंदी भाषा अपने आप में समृद्ध तो है लेकिन उसका विकास भी जरूरी है। हिंदी भाषा के विकास में अनुवाद का बहुत बड़ा योगदान है। भाषा का विकास तब संभव है, जब उसका बारंबार प्रयोग हो। प्रयोग या व्यवहार जितना ज्यादा होता है, उतना उस भाषा का विकास होता है। वर्तमान युग में अगर देखा जाए तो अध्ययन अध्यापन के साथ अनुसंधान, सभ्यता और संस्कृति, राष्ट्रीय एकता और अखंडता की दृष्टि से हिंदी भाषा का बड़े पैमाने पर विकास होता हुआ नजर आता है। अनुवाद अपनी कला और सृजन शक्ति के बलबूते पर पारंपरिक प्रचार –प्रसार माध्यमों के अलावा नवआधुनिक सामाजिक माध्यम गूगल से भी अनुवाद हिंदी भाषा में होने से हिंदी भाषा का विकास हो रहा है।

संदर्भ

1. डॉ. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, चतुर्थ सं. :2005, पृष्ठ सं – 173
2. डॉ. सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली, चतुर्थ सं. :2005, पृष्ठ सं – 174
3. घुमक्कड़ी, लेखक –उत्तम कांबले, अनुवाद –प्रो.सदानंद भोसले, आर .के पब्लिकेशन, मुंबई भूमिका से, पृष्ठ .सं -8
4. डॉ .के .पी.शहा-अनुवाद स्वरूप एवं सिद्धांत, फडके प्रकाशन, कोल्हापुर, प्रथमावृत्ति:जुलाई 1998, पृष्ठ -16
5. डॉ.अर्जुन चव्हाण, अनुवाद चिंतन, अमन प्रकाशन, 104A/118, रामबाग कानपुर-288012 पृष्ठ सं .19 और 20
6. डॉ.हरिमोहन, अनुवाद विज्ञान और संप्रेषण, तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, द्वितीय सं. 2006 पृष्ठ .सं-22
7. प्रा.विकास पाटील, हिंदी भाषा में रोजगार के अवसर, ए.बी .एस .पब्लिकेशन, वाराणसी, संस्करण -2019, पृष्ठ.सं -28
8. डॉ .सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, चतुर्थ सं :2005, पृष्ठ सं – 176